# मतमतांतर भुलाकर चलें ब्रह्माकुमारीज के मार्गदर्शन में

## धार्मिक प्रभाग के सम्मेलन में स्वामी धर्मवेश का उद्‌बोधन

**ज्ञानसरोवर।** वर्तमान अति धर्म ग्लानि के समय में जब मनुष्य एवं प्रकृति का स्वरूप भयानक संकट में पड़ गया है, हम सभी को चाहिए कि अपने सभी मतमतांतर को भूलकर सुसंगठित हो जाएं और ब्रह्माकुमारी संस्था को अपने लिए मार्गदर्शक के रुप मे चुनकर उसी के निर्देशन के अनुसार विकारों पर विजय प्राप्त करके फिर से सुख एवं शांति का साम्राज्य स्थापित करें।

उक्त विचार दिल्ली से पधारे स्वामी धर्मवेश सरस्वती जी ने ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होने कहा कि परमपिता परमात्मा शिव ने हमारे दादा लेखराज के तन का आधार लेकर 1937 को इस अविनाशी रुद्र यज्ञ की स्थापना की है। यही वो आबू पर्वत की पावन भूमि है जहां से रुद्र यज्ञ का पूरे विश्व के 140 देशो मे 9000 के लगभग सेवाकन्द्रों द्वारा

ब्रह्माकुमारीज धार्मिक प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन में शोभायमान संतवृंद।

इस अविनाशी रुद्र यज्ञ को या भगवान के इस पुनीत कार्य को पूरा करने मे तत्पर हैं। मानव जाति के कल्याण के लिए इस महान यज्ञ को पूर्ण करने के लिए हम सभी को संयुक्त प्रयास करना है। संसार का प्रत्येक व्यक्ति सुख शांति की प्राप्ति की कामना रखता है। मानव जाति के इस महानतम रुद्र यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप सभी को एक आदर्श संस्था का नाम सुझा रहा हूँ वह संस्था है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय। मेरे अनुभव में आज दुनिया भर में सर्वश्रेष्ठ संस्था है ब्रह्माकुमारी संस्था। यहाँ पर मैने मानव जीवन के मूल्यों की स्थापना होते हुए देखी है। इस संस्था में मैने पवित्रता, शांति, सत्य, प्रेम, सुख, आनंद एवं शक्ति आदि गुणों का विकास होते हुए देखा है। इससे आदर्श संस्था हमें दुनिया भर मे कहीं और नहीं मिलेगी। इसी के साथ-साथ हमें यह भी विदित होना चाहिए कि दूसरी सभी संस्थाएं मानवकृत हैं मगर ये हमारी संस्था ईश्वरकृत है। यानि परमात्मा शिव ने इस संस्था का निर्माण किया है स्वयं स्थापना की है, ऐसा मेरा विश्वास है। अत: मैं आत्मा मानव-कल्याण के लिए निमित्त अपनी प्रिय संस्था को अपनी धर्म मार्गदर्शक संस्था के रुप मे चुन रहा हूँ तथा इसमें आप सभी का समर्थन चाहता हूँ। इस पवित्र संस्था के पक्ष मे इसी के बैनर तले हम सभी कार्य करें ये संकल्प हम सबको लेना है आज। अब कल से अपने-अपने क्षेत्रों में पहुंचकर अपनी राय एवं संकल्प के अनुसार समस्त सृष्टि पर सत्य देवी देवता धर्म की स्थापना के लिए एवं विश्व को आगे बढ़ाने के लिए ब्रह्माकुमारी संस्था के सेवाकेन्द्र से निर्देश प्राप्त करते हुए इस अविनाशी रुद्र यज्ञ को पूरा करेंगे। और अपना जीवन सफल बनाएंगे। जब-तक इस विश्व पर ये विश्व कल्याणी देवी-देवता धर्म की स्थापना नहीं कर लेते तब-तक हम सुख की नींद नही सोएंगे ऐसा संकल्प करें।

बिदर से पधारे ज्ञानी दरबार सिंह ने कहा कि दादा लेखराज जी ने कुछ आत्माओं के साथ जो संस्था आरंभ की आज वह दुनिया भर में ओम शांति का संदेश उजागर कर रही है। हमारे जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की

-शेष पेज 4 पर..

# जनकल्याण के लिए चार सौ बहनों ने किया जीवन समर्पण

**शांतिवन।** आज के आर्थिक युग और भौतिक साधनों की ओर बढ़ रहे रूझान के बीच ब्रह्माकुमारी संस्था में एक साथ चार सौ बहनों ने आजीवन समाज सेवा का संकल्प लिया। इन बहनों ने परमात्मा शिव को साक्षी मानकर उनके मार्गदर्शन पर चलने की शपथ ली। शांतिवन के डायमंड हॉल में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका समेत बड़ी संख्या में अन्य लोग थे। आजीवन समाज सेवा की शपथ लेने वाली इन बहनों में अधिकांश उच्च शिक्षित हैं और सभ्रांत परिवारों से हैं।

संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि आज इन युवा बहनों ने विश्व को बदलने के संकल्प के साथ परमात्मा शिव को जीवन साथी मान लिया है। यह निर्णय लाखों, करोड़ों युवक-युवतियों के लिए

-शेष पेज 8 पर..

दादी हृदयमोहिनी, दादी रतनमोहिनी, दादी ईशु, ब्र.कु.मुन्नी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.करूणा, ब्र.कु.सरला तथा अन्य केक काटते हुए। साथ हैं जन-जन की आध्यात्मिक सेवा का संकल्प करते हुए समर्पित बहनें

**भारत -** वार्षिक 170 रुपये
तीन वर्ष 510 रुपये
आजीवन 4000 रुपये
**विदेश -** 2000 *रूपये (वार्षिक)*
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट माउण्ट आबू ) द्वारा भेजें ।

**ओम शान्ति मीडिया**
**सम्पादक : ब्र.कु.गंगाधर**
**ब्रह्माकुमारीज, शांतिवन, तलहटी**
**पोस्ट बॉक्स नं. - 5, आबू रोड (राज.) 307510**
Enquiry For Membership, Mob. No. - 09414006096
(M)- 9414154344, E-mail : mediabkm@gmail.com,
omshantimedia@bkivv.org, webside:www.omshantimedia.info

प्रति

RNI NO RAJHN/2000/721, NEWS PAPER TO POST CONCSSIONAL REGISTRATION NO. RJ/SIROHI/9623/12-14, 12TH TO 14 TH, 22 ND TO 24TH POSTED TO SHANTIVAN POST OFFICE
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, सलाहाकार संपादक: कमल दीक्षित, प्रकाशक: ब्र.कु.करूणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज् मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ.) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।